हर्षवर्धन -2

हर्षवर्धन की सभाएँ

ह्वेनसांग के समय हर्ष ने कन्नौज और प्रयाग में दो यादगार सभाएँ आयोजित कीं-

- कन्नौज सभा

643 ई. में हर्ष ने अपनी राजधानी कन्नौज में एक महान धार्मिक सभा आयोजित की।सभा बुलाने का मुख्य उद्देश्य बुद्ध की शिक्षाओं, विशेष रूप से महायान बौद्ध धर्म को उजागर करना था।हर्ष इस अवसर का उपयोग ह्वेनसांग को सम्मानित करने के लिए भी करना चाहते थे, और उन्हें सभा की अध्यक्षता करने के लिए नियुक्त किया गया। नालंदा के सभी सहायक राजा और विद्वान परिषद में शामिल हुए, जो 23 दिनों तक चली। सबसे महत्वपूर्ण निर्माण एक विशाल मीनार थी जिसके बीच में बुद्ध की एक स्वर्ण प्रतिमा रखी गई थी; यह प्रतिमा स्वयं राजा जितनी ऊँची थी।

- प्रयाग सभा

कन्नौज सभा के बाद उसी वर्ष प्रयाग में एक और शानदार सभा आयोजित की गयी। इसे महा मोक्ष परिषद के नाम से जाना जाता था। हर्ष हर पाँच साल में लोगों को उपहार देने के लिए इस सभा का आयोजन करता था। 643 ई. में प्रयाग में ह्वेनसांग ने जो सभा देखी, वह हर्ष के शासनकाल में आयोजित छठी मोक्ष परिषद थी। कन्नौज सभा मुख्य रूप से बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय को भी उजागर करने के लिए धार्मिक प्रकृति की थी, वहीं प्रयाग सभा सभी वर्गों के लोगों को दान देने के लिए जानी जाती थी। इसमें लोगों की भारी भीड़ उमड़ी।सम्राट हर्ष और ह्वेनसांग ने इस अनूठी सभा में भाग लिया और लोगों के बीच उपहार वितरित किए। सभा के समारोह 75 दिनों तक चले। इतनी बड़ी सभा के लिए आवास और भोजन की हर व्यवस्था विस्तृत थी। इस सभा के दौरान, हर्ष ने बुद्ध, सूर्य और शिव की तीन मूर्तियाँ स्थापित कीं और अपने कपड़ों को छोड़कर अपना सब कुछ दान कर दिया।

हर्षवर्धन की विजय

उत्तर भारत के अंतिम महान हिंदू सम्राट हर्षवर्धन ने रणनीतिक विजयों की एक श्रृंखला के माध्यम से एक विशाल साम्राज्य को मजबूत किया।उन्होंने बंगाल के शासक शशांक

को हराकर शुरुआत की और उसके क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया। इसके बाद हर्ष ने कन्नौज, अहिच्छत्र और श्रावस्ती जैसे क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करते हुए दक्षिण की ओर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। हर्ष का साम्राज्य हिमालय से लेकर नर्मदा नदी तक और पंजाब से लेकर पूर्वी तट तक फैला हुआ था। हालाँकि, हर्ष की महत्वाकांक्षाओं को चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जिसने नर्मदा के तट पर हर्ष को हराया था। इस असफलता के बावजूद, हर्ष ने उत्तर भारत के एक महत्वपूर्ण हिस्से पर शासन करना जारी रखा, जिसने इस क्षेत्र पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा।

हर्षवर्धन राजवंश की राजनीति

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद, उत्तर भारत में गुप्त शासकों के अवशेषों द्वारा शासित छोटे गणराज्यों और छोटे राजशाही राज्यों का निर्माण हुआ।हर्ष ने पंजाब से लेकर मध्य भारत तक के छोटे गणराज्यों को एकजुट करके अपना साम्राज्य स्थापित किया।हर्षवर्धन साम्राज्य में दो अलग-अलग प्रकार के क्षेत्र शामिल थे: पहला, हर्षवर्धन के शासन के सीधे अधीन क्षेत्र, जैसे राजपुताना, मध्य प्रांत, गुजरात, बंगाल और कलिंग, और दूसरा, सिंध, जालंधर, कश्मीर, नेपाल और कामरूप (आधुनिक असम) जैसे राज्य और साम्राज्य उसके अधीन सामंत बन गए।हर्ष ने असम के राजा और वल्लभी के शासक ध्रुवसेन के साथ गठबंधन बनाए रखा। उन्होंने तांग राजवंश के ताई त्सुंग द्वारा शासित चीनी साम्राज्य के साथ भी राजनयिक संबंध बनाए रखे।